जाओ और
चेले बनाओ

प्रारम्भिक शिष्यता

भाग – 1

डोटा

द्वारा

नियम पुस्तिका –1

अगुवों के दल के लिए

तीसरा संस्करण

विषय सूची

दल अगुवों के लिए नियम पुस्तिका- 1
चेले बनाने का आरम्भ भाग - 1

प्रस्तावना 1. प्रस्तावना और कॉपी राईट
प्रस्तावना 3. यीशु मसीह की सेवकाई
प्रस्तावना 4. एक नए छोटे दल की स्थापना कैसे करें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम - 1

3 महीने के लिए एक साप्ताहिक कार्यक्रम जिस में 11/2 – 2 घन्टे प्रति सप्ताह के लगभग समय दिया जाएगा। छोटा दल ही बनाना है जिस में 3 से 10 लोग हो सकते हैं। हर कार्यक्रम का आरम्भ प्रार्थना से होगा और अन्त में उत्साहपूर्वक उत्तर देने वाली प्रार्थना के साथ होना चाहिए।

अध्याय 1. आराधना (परमेश्वर असीमित है)
बाइबल शिक्षा- परमेश्वर के साथ समय बिताना, यह एक मनपसंद सच्चा तरीका है।
परमेश्वर के साथ निजि समय को व्यवहार में लाएँ। (भजन 23)

अध्याय 2. अपने निजि समय को परमेश्वर के साथ बिताएँ। (मत्ती 1:1 -7:29)
याद करना - निश्चित (यीशु में उद्धार निश्चित है) - युहन्ना 10:28)
बाइबल अध्ययन (मैं परमेश्वर के वचन पर कैसी प्रतिक्रिया दिखाऊँ?)(लूका 8:4-15)

अध्याय 3 आराधना (परमेश्वर महान है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 8:1-11:24)
बाइबल शिक्षा (सुसमचार की धारणा को समझाना भाग - 1)

अध्याय 4. परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 11:25-14:36)
याद करना - निश्चित (प्रार्थनाओं में उत्तर निश्चित है) युहन्ना 16:24)
बाइबल अध्ययन (मैं कहाँ से आया हूँ।) उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ)

अध्याय 5. आराधना (परमेश्वर एक व्यक्ति है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 15:1-18:20 तक)
बाइबल शिक्षा (बाइबल को प्रयोग में लाने के 7 तरीके)

अध्याय 6. परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 18:21 - 21:46))
याद करना - निश्चित (यीशु में विजय निश्चित है) 1 कुरन्थियों 10:13
बाइबल अध्ययन (मैं कौन हूँ?) इफिसियों 2:1 -22)

अध्याय 7. आराधना (परमेश्वर पवित्र है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 22:1-25:13)
बाइबल शिक्षा (प्रार्थना - प्रार्थना परमेश्वर के वचन की प्रतिक्रिया है।)

अध्याय 8. परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (मत्ती 25:14 -28:20)
याद करना - निश्चित (यीशु में क्षमा निश्चित है) 1युहन्ना 1:9)
बाइबल अध्ययन (मैं यहाँ पर क्यों हूँ?) इफिसियों 4:17-5:17)

अध्याय 9 आराधना (परमेश्वर प्रेम है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (युहन्ना 1:1-4:22)
बाइबल शिक्षा (आज्ञाकारिता - बढ़ने और विकसित होने की शिक्षा है।)
अध्याय 10 परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (युहन्ना 4:23 - 7:52)
याद करना - निश्चित (यीशु में मार्गदर्शन निश्चित है नीति वचन 3:5-6 पद)
बाइबल अध्ययन (मैं कहाँ जा रहा हूँ? प्रकाशितवाक्य 21:1- 22:6)
अध्याय 11 आराधना (परमेश्वर मेरा सहायक है)
परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (युहन्ना 7:53 -11:37)
बाइबल शिक्षा (संगति - हमारी एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारियाँ)
अध्याय 12 परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना। (युहन्ना 11:38-14:31)
याद करना - निश्चित (पदों के पुनरावलोकन द्वारा हर बात निश्चित है)
बाइबल अध्ययन (मैं कैसे फलवन्त हो सकता हूँ?) युहन्ना 15:1-17)

अतिरिक्त लेख 1. एक तरीका जिसके द्वारा परमेश्वर के साथ निजि समय बिता सकते हैं
अतिरिक्त लेख 2. बाइबल पठन का एक कार्यक्रम
अतिरिक्त लेख 3. बाइबल पर निशान लगाने का सही तरीका
अतिरिक्त लेख 4. बाइबल को अध्ययन करने का तरीका (5 कदमों का तरीका)
अतिरिक्त लेख 5. बाइबल मनन करने और याद करने का तरीका
अतिरिक्त लेख 6. चेलों को शिक्षा देने के निर्देश
अतिरिक्त लेख 7. घरों में पारिवारिक संगति की अगुवाई करना।

प्रस्तावना

क्या आप यीशु के चेलों के समान बढ़ना चाहेंगे?
क्या आप दूसरों को भी यीशु में बढ़ने में सहायता देना चाहते हैं?

यदि आप ऐसा करना चाहते हैं तो आप शिष्य बनाने के दल के अगुवे बन जाएँ? इस हस्त पुस्तिका को पढ़े और चेले बनाने के विषय में और उन नियमो का पालन करें। अब से हम उसे 1 से 4 भाग की नियम पुस्तिक के नाम से जानेगे।

यीशु ने अनेक चेले बनाए थे। जब चेलों ने यीशु से पूछा था, "हे रब्बी तू कहाँ रहता है।" तब यीशु ने उन से कहा था, "चलो तो देख लोगे। आओ मेरे पीछे आओ।"(युहन्ना 1:39) सभी तरफ से लोग उसके पीछे आ रहे है यह देखने के लिए कि वह कैसा जीवन जीता है और उसने अपना जीवन किस काम के लिए समर्पित किया था। संसार के हर देश के लोग यह जानने के लिए कि वह कौन है और वह क्या करता था उसके पीछे चलने लगे। यीशु ने उन सब के जीवन पूरी तरह से बदल दिए थे। और उसने हमारे जीवनों को भी पूरी तरह से बदल दिया है।

बाद में यीशु ने प्रार्थना के साथ 12 चेलों को चुना और उनको अपना चेला बनने की शिक्षा से लैस किया था। यीशु चाहते थे कि ये चेले जो विश्वास में बढ़ रहे थे उसके साथ समय बिताएँ और उसकी शिक्षाएँ सीख कर चेले के रूप में बढ़ते जाएँ। वे चाहते थे कि उनके चेले उसके द्वारा दिए वचनों को सुने और उसको अपने जीवन में उतार कर उसके समान जीवन जीना सीख लें और उसकी सेविकाई का अनुकरण करें। (मरकुस 3 के 13-15)

करीबन दो साल बाद यीशु ने अपने चेलों को एक काम दिया था। उसने कहा जाओं और सब जातियों के लोगों को शिष्य बनाओ (मत्ती 28 के 18-20) और तब चेलों ने जाकर यरुशलेम से संसार के अन्त तक चेले बनाए थे। (प्रेरितो के काम 1:8) फिर इन चेलों ने अन्य चेले बनाए (प्रकाशितवाक्य 1:8) उन स्थानों पर भी जहाँ परमेश्वर का वचन अभी तक नहीं पहुँचा था। उन्होंने जो भी ज्ञान पाया था उसे दूसरों में बाँट दिया था। (2 तिमुथयुस 2:2) इस प्रकार यीशु के चेले आज भी इस संसार के हर देश में चेले बना रहे हैं।

प्रेरित पौलूस सिखाते हैं कि यीशु मसीह ने विशेषकर मसीहों को यह कार्य सौंपा था, कि वे परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की सेविकाई के लिए लैस करें और परमेश्वर की कलीसिया का निर्माण करें।(इफीसियों 4:11-16) नियम पुस्तिका 4 का ध्येय है कि वह मसीहों के दल के अगुवों को अन्य मसीहों को जो उनके अधीन हैं यीशु का चेला बनाने में सहायक सिद्ध हो सकें। एक व्यसक या परिपक्व मसीही ही यीशु का चेला होता है।

यह कोर्स चेलों के प्रशिक्षण को व्यवाहिक बना सकता है जब हम अगुवों को निम्न सहायता दे देते हैं।

1. इन 4 नियम पस्तिकाओं में 12 अध्याय हैं जो 3 महीनों में पूरे किए जा सकते हैं।
2. बाइबल के महत्त्वपूर्ण प्रसंग वचन विद्यार्थियों को यीशु और बाइबल को सही रीति से जानने में सहायक सिद्ध होंगे।
3. दल के अगुवे को प्रश्नों की सहायता लेनी चाहिए और विद्यार्थियों को बाइबल के लेखाँशों को पढ़ने के बाद ही उन पर विचार-विमर्श करना चाहिए।
4. जो भी नोट्स हों उन में सभी प्रश्नों के उत्तरों का साराँश होना चाहिए।
5. यह प्रशिक्षण विद्यार्थियों को तैयार करने में सहायता करेगा कि कैसे अकेले या छोटे दल में भी कैसे चेला बनाया जा सकता है।
6. हर अध्याय के साथ ग्रह कार्य भी होगा जो लिखित रूप से विद्यार्थियों को दिया जाएगा।
7. यह कोर्स दूसरों तक पहुँचाना अत्यन्त सरल है।
8. जब 12 अध्यायों को यह कोर्स समाप्त हो जाएगा तब हर विद्यार्थी को इस नियम पुस्तिका की जो दल के अगुवों की सहायता के लिए है, एक प्रति दे दी जाएगी जिससे वे नए छोटे दलों को सिखा सकें।

हमारी प्रार्थना है कि आपके क्षेत्र में चेलों की संख्या में जल्दी से बढ़ोतरी होने पाए। जिससे बड़ी संख्या में लोग अपने विश्वास के प्रति आज्ञाकारी बन जाएँ। (प्रेरितों के काम 6:7)

परमेश्वर की महिमा हो आमीन। जैसा रोमियो के 11:36 पद कहता है, "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के

द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानुग होती रहे।"

DOTA	चेलों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम जो बहुत पहले से रेडियों पर प्रसारित होता आया है।
1994	पहला संस्करण
2009	तीसरा संशोधित संस्करण

कॉपी राईट

चारों नियम पुस्तिकाओं को कापी-राईट द्वारा अधिकार है कि प्रशिक्षण देने के लिए स्वतन्त्र रूप से उसे मूल प्रतिलिपि से कॉपी किया जा सकता है।परन्तु उसमें परिवर्तन लाने का, या उसे बेचने या उसका किसी अन्य भाषा में अनुवाद करने का अधिकार किसी को भी तब तक नहीं होगा जब तक उसके लेखक से अनुमति प्राप्त नहीं हो।

सिफारिशी पत्र

इन तथ्यों को दूर-दूर तक फैलाना जिससे अनेक लोग आशीष पा सकें। लेकिन क्योंकि इन नियम की हस्त पुस्तिकाओं का उद्देश्य मसीहों को प्रशिक्षण देना और उन बातों से लैस करना है जिन के द्वारा वे यीशु के चेले बन जाएँ तो अगुवों को चाहिए कि वे इन नियम पुस्तिकाओं की प्रतिलिपि बना लें जिससे विद्यार्थियों को प्रतिलिपि के अनुसार ही प्रशिक्षण दिया जा सके। और 12 अध्यायों के प्रशिक्षण के बाद ही वह किसी और को या किसी छोटे दल को प्रशिक्षण दे सकते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम -2

एक गहन कार्यक्रम जिसे सप्ताह में 1 बार प्रयोग मे लाया जा सकता है (1)केवल एक दिन के लिए या (2) 6 दिन के सेमिनार के दौरान। जितने भी लोग आए हों उनको छोटे-छोटे दलों में विभाजित कर लेना। जिनके ऊपर एक प्रशिक्षित अगुवा हो। हर दल केवल 3 से 10 लोगों का ही हो।

कार्यक्रम के सुझाव

09.00 - 9.30	आराधना (दल के साथ)
9.30 - 11.00	बाइबल शिक्षा (दल के साथ) लघु अवकाश
11.30 - 13.00	बाइबल अध्ययन (दल के साथ) लघु अवकाश
14.00 - 17.00	अतिरिक्त समय - बाकी बची बाइबल शिक्षा के प्रश्नोत्तर के लिए या फिर बाइबल शिक्षा के लिए अतिरिक्त समय दिया जा सकता है।
17.30 - 17.45	चिन्तन और याद करने का समय (दो-दो लोगों के दल बना कर)
17.45 - 18.30	बाइबल पठन - हर व्यक्ति के लिए अकेले बाइबल पढ़ने का समय।
18.30 - 19.00	परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो को एक साथ परमेश्वर के साथ समय बिताना होगा)
19.00 - 19.45	प्रार्थना और वचनों और गवाहियों को बाँटना (यह छोटे दलों में ही करना होगा)

प्रथम दिन अध्याय 1 और 2 प्रार्थना आराधना (परमेश्वर असीमित है।) बाइबल शिक्षा (परमेश्वर के साथ निजि समय बिताने का सच्चा मनपसंद तरीका) बाइबल अध्ययन (मैं परमेश्वर के वचन का प्रति उत्तर कैसे दूँ? लूका 8:4-15) याद करना (उद्धार निश्चित है)युहन्ना 10:28) बाइबल पढ़ना (मत्ती 1-7) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो-दो लोगों कॆ साथ मत्ती 3:1-12) गवाही देना और प्रार्थना	**चौथा दिन अध्याय 7 और 8** प्रार्थना आराधना (परमेश्वर पवित्र है) बाइबल शिक्षा (प्रार्थना परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देना है) बाइबल अध्ययन (मैं यहाँ पर क्यों हूँ? इफिसियों 4:17 - 5:17 याद करना (क्षमा निश्चित है)1 युहन्ना 1:9) बाइबल पढ़ना (मत्ती 22-28) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ मत्ती 25:14-30) गवाही देना और प्रार्थना
दूसरा दिन अध्याय 3 और 4 प्रार्थना आराधना (परमेश्वर महान है।) बाइबल शिक्षा (सुसमाचार की धारणा) बाइबल अध्ययन (मैं कहाँ से आया हूँ?) (उत्पत्ति 1:1- 2:4अ) याद करना (प्रार्थना के उत्तरों का आश्वासन युहन्ना 16:24)	**पाँचवाँ दिन अध्याय 9 और 10** प्रार्थना आराधना (परमेश्वर प्रेम है।) बाइबल शिक्षा (आज्ञाकारिताः बढ़ने और विकसित होने की शिक्षा है) बाइबल अध्ययन (मैं कहाँ जा रहा हूँ? प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:6) याद करना (मार्गदर्शन निश्चित है) नीति वचन 3:5-6)

बाइबल पढ़ना (मत्ती 8-14) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ मत्ती 10:16-33) गवाही देना और प्रार्थना	बाइबल पढ़ना (युहन्ना 1 - 7) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ युहन्ना 5:16-30) गवाही देना और प्रार्थना
तीसरा दिन अध्याय 5 और 6 प्रार्थना आराधना (परमेश्वर एक व्यक्ति है) बाइबल शिक्षा (बाइबल इस्तेमाल करने के 7 तरीके) बाइबल अध्ययन (मैं कौन हूँ? इफीसियों 2:1-22) याद करना (विजय निश्चित है) 1 कुर. 10:13) बाइबल पढ़ना (मत्ती 15-21) परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना (मत्ती 15:1 -20) गवाही देना और प्रार्थना	**छटा दिन अध्याय 11 और 12** प्रार्थना आराधना (परमेश्वर मेरा सहायक है।) बाइबल शिक्षा (संगति : हमारी एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारी) बाइबल अध्ययन (मैं फलवन्त कैसे हो सकता हूँ? (युहन्ना 15:1-17) याद करना (पदों के पुनरावलोकन द्वारा मसीही निश्चितता) बाइबल पढ़ना (युहन्ना 8-14) परमेश्वर के साथ समय बिताना (दो-दो लोगों के साथ युहन्ना 14:1-31) गवाही देना और प्रार्थना

सम्भव अतिरिक्त शिक्षाएँ

प्रस्तावना 3		यीशु मसीह की सेवकाई
प्रस्तावना 4		एक चेला बनाने का दल कैसे शुरू किया जाए
अतिरिक्त लेख	1	परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना शान्त समय का मनपसंद सच्चा तरीका
अतिरिक्त लेख	2	बाइबल पठन का कार्यक्रम
अतिरिक्त लेख	3	बाइबल में चिन्ह लगने का तरीका
अतिरिक्त लेख	5	बाइबल को मनन करने और याद करने के तरीके
अतिरिक्त लेख	6	दल के अगुए के लिए निर्देश
अतिरिक्त लेख	7	एक घर में संगति सभा की अगुवाई करना

यीशु मसीह की सेवकाई

क्या था जिसने यीशु मसीह की सेवकाई को विशेष बनाया था?
क्या है जो हमारी सेवकाई को विशेष बना सकता है?

क. नये नियम में यीशु मसीह की सेवकाई और उसके चेले

1. यीशु मसीह की सेवकाई और उसके चेलों की सेवकाई एक राज्य की सेवकाई है।

- **(1) परमेश्वर का राज्य**

परमेश्वर का राज्य दिखाई देने वाली कलीसिया है जो मसीह की देह है या सारे संसार में फैला समाज है जो मसीहों के दावे से कहीं अधिक दृष्टिगोचर है।

भजन 24:सामान्य रूप से परमेश्वर का राज्य या सबसे महान परमेश्वर का राज्य स्वर्ग में है और वह अनन्त काल से अनन्त काल तक सारे लोगों और सारी चीज़ों पर है (भजन संहिता 145:13;146:10 यर्मियाह 10:10 और 1 तिमुथियुस 6:16)

मत्ती 28:18 विशेष रूप से परमेश्वर का राज्य ही सर्वशक्तिमान का इस पृथ्वी पर महान राज्य है जो यीशु मसीह के द्वारा है। (युहन्ना 13:3, इफीसियों 1:20-21, फिलिपियों 2:9-11, कुलुसियों 1:15-20; प्रकाशितवाक्य 1:5 17:14;19:16)

प्रकाशितवाक्य 1:5-6परमेश्वर का राज्य आधारित है यीशु मसीह की पहली आमद के समय के उद्धार के सम्पूर्ण कार्य पर आधारित है। (मत्ती 21:39,42-43; 28:18; प्ररितों के काम 2:36) और उस काम को पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासयों में आज ही कार्यान्वित करने पर भी आधारित है। (रोमियो 14:17)

लूका 17:20-21. परमेश्वर का राज्य यीशु का सबसे महान राज्य है क्योंकियह विश्वासियों के दिलों पर राज्य करता है और उनके जीवनों में दिखाई देता है। (मत्ती 6:10, 33; 25:34-40)

- **(2) परमेश्वर का राज्य का प्रतिफल 4 क्षेत्रों मे दिखाई देता है**

मरकुस 10:25-26 परमेश्वर का राज्य तो विश्वासी के उद्धार के द्वारा शुरू होकर अन्त तक रहता है। उसका चुनाव तो अनन्तकाल का है। (इफीसियों 1:4-5) उनका पुनर्जन्म समय भी सही हुआ था।(युहन्ना ३:३-८) उसके जीवन का परिवर्तन (1 कुरन्थियों 6:9-11) और यीशु के शरीर का पुनरुत्थान जब यीशु की दोबारा आमद होगी (१ कुरन्थियों 15:24-26) परमेश्वर द्वारा दिए इस उद्धार में सारी आत्मिक और भौतिक आशीषें शामिल हैं जो आत्मा और शरीर दोनों के लिए हैं। और उसका प्रतिफल जो परमेश्वर के राजा होने को दर्शाता है और आज्ञाकारिता से पूरा करता है। (इफीसियों 1:3)

मत्ती 16:18-19परमेश्वर का राज्य उस संविधान के अधीन बनी विश्वासियों की उस एककलीसिया में प्रकट होता है जो इस पृथ्वी पर तैयार की जाएगी। (इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 2:4-5, 9-10) कलीसिया लोगों का वह समाज है जिन के दिलों में परमेश्वर के राज्य का शासन दिखाई देता है क्योंकि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करती है।

मत्ती 25: 34-40परमेश्वर के राज्य को हम विश्वासियों के भले कामों में देख सकते हैं। इसके साथ साथ हम उसे समाज में मनुष्य के हर मानवीय पहलु में भी देख सकते हैं जैसे कि वह लोगों के दिमाग़ पर, शरीर पर, भावनात्मक क्षेत्र में, समाज और आध्यात्मिक क्षेत्रों में जैसे शिक्षा, न्याय, करुणा, प्रेममें कैसा प्रभाव डालता है। (रोमयो 14:17)

1 कुरन्थियों 1:24-26 और अन्त में परमेश्वर का राज्य उस छुटकारा पाई हुई सृष्टि में प्रकट है जो भविष्य में नई पृथ्वी और नया आकाश कहलाएगा जिस में परमेश्वर की महिमा प्रकट होगी और तब उसके बुलाए हुए लोगों पर प्रकट

होगी परमेश्वर के उद्धार के कार्य की सही अनुभूति। (मत्ती 25:34; 2 पतरस 1:11; प्रकाशित वाक्य 11:15)

- **3. परमेश्वर के राज्य के 5 गुण**

क) **मत्ती 12:28** परमेश्वर का राज्य तो तभी शुरू हो गया था जब यीशु मसीह पहली बार इस पृथ्वी पर आए थे।(मत्ती 21:41)

ख) **युहन्ना 18:36** यीशु मसीह का राज्य इस संसार में है परन्तु इस संसार का नहीं है। (लूका 17:21)

ग) **मत्ती 13:11-17** परमेश्वर का राज्य विश्वासियों के लिए एक प्रकाशन है परन्तु अविश्वासियों के लिए एक पहेली है।

घ) **मत्ती 13:24-26; 36-43** परमेश्वर के राज्य का वर्तमान में एक रूप है लेकिन भविष्य में परमेश्वर के राज्य एक अन्य रूप है जिसे हम नई पृथ्वी पर देखेंगे।

ङ) **मत्ती 13: 31-33** परमेश्वर का राज्य एक छोटे से रूप में शुरू होता है और धीरे धीरे बढ़ता जाता है और अन्त में सब जगह फैल जाता है। (दानिएल 2:34-35; 44-45)

2, यीशु मसीह और उसके चेलों की सेवकाई विशेषकर घरों में की जाने वाली सेवकाई है

मरकुस 2:1-5 यह ज़रूरी नहीं है कि यह सेविकाई किसी कलीसिया के भवन में ही की जाए।
यीशु मसीह ने लोगों के घरों में प्रचार किया, शिक्षा दी, और लोगों को चंगा भी किया था। (मरकुस 3:20, 32-35)

प्रेरितों के काम 5:42 प्रेरित लोग घर-घर जाकर प्रचार करते थे और उन्होने कभी भी शिक्षा देना बन्द नहीं किया था। (प्रेरितों के काम 20:20-21) वे अपने ही घरों में मित्रों और रिश्तेदारो के बीच सुसमाचार का प्रचार करते थे।

मरकुस 2:15-16 यीशु ने आम लोगों के साथ घरों में खाना खाते समय भी संगति की थी। मसीही लोग एक साथ प्रभु भोज के लिए रोटी तोड़ने को इक्ट्ठे होते थे। (प्रेरितों के काम 5:42; 20:7-9)

प्रेरितों के काम 12:12 मसीही लोग एक साथ घरों में प्रार्थना करते थे।

प्रेरितों के काम 16:31-33 लोग बदल कर घरों मे ही बपतिस्मा ले रहे थे। (प्रेरितों के काम 9:17-18; 18:7-11; 22:16)

1 कुरन्थियों 16:19 मसीही कलीसियाएँ एक साथ घरों में इक्ट्ठी होती थीं (रोमियो 16:5; कुलुसियों 4:15; फिलेमोन

3. यीशु मसीह की और चेलों की सेवकाई प्रशिक्षण देकर लैस करने की सेवकाई थी।

यह ज़रूरी नहीं है कि प्रशिक्षण नियमित रूप से धर्म के अनुसार सप्ताह में एक बार ही आयोजित की जाए। सेविकाई के लिए प्रशिक्षित करने के लिए रिश्ता और वह चेले गुरू के सम्बन्ध के आधार पर किया जाता था। इसके लिए शब्दों की कुँजी है:

- सच्चाई की शिक्षा
- कौशल का प्रशिक्षण
- हर प्रशिक्षण प्रसारण में एक उदाहरण होना ज़रूरी है।
- जो प्रशिक्षण पा चुके हैं, उन चेलों को बाहर भेजना।

- **(1) यीशु ने चेले बनाए (जो परिपक्व मसीही थे)**

युहन्ना 1:39 यीशु ने अपने चेलों को शिक्षा दी और उसके साथ एक उदाहरण भी दिया था। वे कहते थे "आओ और देखो"वे जीवन में लोगों को अपने साथ शामिल कर लेते थे और स्वयं भी उनके जीवन में शामिल हो जाते थे।

मरकुस 3:14 तब उसने उनको बुला कर कहा था,"मेरे साथ बने रहो और मेरे पीछे चलो।" जिससे वह उनको शिक्षा दे सकें कि वे कैसे मनुष्यों के मछुवारे बन सकते हैं। (मत्ती 4:19) उसने लोगों को प्रशिक्षण दिया कि वे उसकी शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू कर सकें। (मत्ती 7:24-27)

मत्ती 4:23 यीशु और उसके चेले सारे प्रान्त में फिरते हुए उपदेश करते, सुसमाचार का प्रचार करते और लोगो की हर तरह की बिमारी को दूर करते रहे।

- **(2) यीशु ने प्रशिक्षण देकर कार्य करने वालो को लैस किया था**

मत्ती 9:10-13: उन्होंने सिखाया कि वे उनके पास जाएँ जो दया और भलाई के लिए ज़रूरतमन्द हैं। (मत्ती 11:19; लूका 19:10)
मत्ती 9:17: उनको नएजीवन के संदेश को नए रूप में लोगों पर उँडेलना पड़ा था। (मत्ती 15:1-9)
मत्ती 10:5-8: उन्होंने प्रचार करने का अभ्यास किया, और लोगों को चंगा किया और वह सब जो उन्होंने पाया था उसे मुफ्त में दूसरों में बाँट दिया था। (1 कुर. 9:18-27)

(3) यीशु ने अगुवों को भेजा थाः

युहन्ना 20:21: अन्त में यीशु ने अपने चेलों को भेजा था कि वे जाकर वह करें जो वह स्वयं करता था।
मत्ती 28:18-20: उऩको सभी राष्ट्रों में जाना था और उनको सुसमाचार के प्रचार के द्वारा, विश्वासियों को बपतिस्मा देकर, और उसकी शिक्षा सिखा कर उनका पालन करने के लिए वह सब करना जिस की उसने आज्ञा दी थी। उनको यीशु मसीह का चेला बनाना था।

(1) यीशु मसीह और उसके चेलों की सेवकाई बड़ी संख्या में चेले बनाना था

यह सेवकाई किसी तरह की परम्परा को स्थापित करना नहीं था।

- **(1) तीन अति महत्तवपूर्ण कुँजियाँ**

<u>एक बड़ा दलः</u> समाज की भीड़
<u>चेलों का एक छोटा दलः</u>घर पर संगति या वह कलीसिया जो नियमित रूप से घरं पर मिलती है।
<u>व्यक्तिगतः</u> एक अकेला व्यक्ति जब एक अकेले व्यक्ति से मिले और उसका एक ही विशेष लक्ष्य हो जैसे(शिक्षा देना या परामर्श देना)

- **(2) तीन भिन्न बातों पर विशेष ज़ोर देना**

<u>एक बड़े दल में हम शिक्षा और प्रचार पर ज़ोर देते हैं-</u>ज्ञान, समझ और प्रोत्साहन जिससे कि वे कुछ अच्छा करें।(प्रेरितों के काम 10:38; 20:18-20)

<u>एक छोटे दल में हम प्रशिक्षण पर अधिक ज़ोर देते हैं। -</u> इसमें शिक्षा, पारस्परिक बातचीत और व्यवहार, एक दूसरों को उकसाना कि वे भले काम से प्रेम रखें। (इब्रानियों 10:24-25)

<u>व्यक्तिगत रूप में हम ज़ोर देते है किसी एक के उदाहरण काः</u> निजि रूप से संगति करना, चरित्र और आदतों में बदलाव, (कुलुसियों 1:28-29; 2 तिमुथियुस 3:10-11, 16) वास्तव में कुछ भला करना (प्रेरितों के काम (20:34-35), विशेष कार्यों के लिए लैस करना और एक साथ परमेश्वर के राज्य में सेवकाई करना। (इफिसियों 4:12; 2 तिमुथियुस 3:17)

• **(3) बाइबल की व्याख्याओं का मूल्य बड़े दलों के लिए, छोटे दलों के लिए, और एक व्यक्तिगत के लिए भी (तिमुथियुस के लिए)**

यीशु -
- ↗ (एक बड़े दल के लिए) भीड़ (मत्ती 9:36)
- → (छोटे दल के लिए) 12 चेले (मत्ती 10:12
- ↘ (अकेला व्यक्ति) पतरस (युहन्ना 1:42; मत्ती 16:18)

↓

पतरस -
- ↗ भीड़ (5000, प्रेरितों के काम 4:4)
- → प्रेरितों का दल (प्रेरितों के काम 2:14)
- ↘ बरनाबास (प्रेरितों के काम 4:36-37)

↓

बरनाबास -
- ↗ एक बड़ी संख्या (प्रेरितों के काम 11:24
- → पौलूस (प्रेरितों के काम 11:25-26)
- ↘ पूरी कलीसिया (2 कुर. 11:28)

↓

पौलूस -
- ↗ पूरी कलीसिया (2 कुर. 11:28)
- → उसका दल जिस में साथी मज़दूर भी थे।
- ↘ तिमुथियुस (फिलिपियों 2:19-23; 2 तिमुथियुस 3:10-11)

↓

तिमुथियुस-
- ↗ इफिसुस की कलीसिया (1 तिमुथियुस 1:3; 2 तिमुथियुस 4:1-5) पुरनिये, डीकन, विधवाएँ, बूढ़े, जवान, गुलाम, मालिक, धनी इत्यादि
- → उस पर भरोसा रखें जो आपने विश्वस्त और योग्य व्यक्तियों से सीखा है (2 तिमुथियुस 2:2)
- ↘

↓

भरोसेमन्द+ योग्यव्यक्ति -
- ↗ दूसरे (2 तिमुथियुस2:2) उदाहरण के लिए किसी अन्य कलीसिया की अगुवाई एक अन्य छोटे दल के भरोसेमन्द और योग्य व्यक्ति को प्रशिक्षण देना।
- → किसी शिक्षित और योग्य व्यक्ति के द्वारा शिक्षा देना, प्रशिक्षण देना, और
- ↘ एक उदाहरण को प्रस्तुत करना।

↓

तुम और मैं - इस रीति से हम जो आज के युग में जीते हैं हमें छोटे दलों में शिक्षित किया गया है शायद जैसे तिमुथियुस को तैयार किया गया था।और हमें केवल लैस करने का प्रयास किया गया था।

क. यीशु और उसके चेलों की सेवकाई आज भी जारी है

1. छोटे दलः घरों में आयोजित संगति की सभाएँ।

घरों मे आयोजित सभाएँ सप्ताह में एक बार होने वाली सभाएँ होती हैं। जहाँ पर आस पास के लोग एक छोटे दल में लोग इकट्ठे होते है। जहाँ भी वे रहते हैं वहाँ से वे पैदल चल कर या फिर यात्रा कर के सभा के स्थान पर पहुँच जाते हैं।

- **(1) यीशु अपनी सेवकाई जारी रखते हैं।**

आज यीशु अपनी सेवकाई को साधारण विश्वासियों के द्वारा जारी रखते हैं।
-समाज में बड़े दलो की सेवा करके।
-विश्वासियों को प्रशिक्षण देकर जिससे वे घरों में संगति कर सकें।
-या फिर तिमुथियुस के समान किसी एक का परामर्शदाता या शिक्षक बन जाना।

विश्वासी अपने समाज में कुछ भला करने की कोशिश करते हैं। विश्वासियों के छोटे दल हर हफ्ते विश्वासियों के घरों में मिलते हैं कि यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर क स्तुति कर सकें। जिससे वे यीशु के प्रति ज्ञान, और आज्ञाकारिता में बढ़ते रहें और बहुत से अन्य चेले बनाने में सफल हो जाएँ। परिपक्व विश्वासी व्यक्ति मिलते रहते हैं और वे उनके जीवन मे तिमुथियुस के समान अन्य दल के अगुवों को लैस करेंगे।

- **(2) चेले बनाने और उनको अनुशासित करने के लिए सात मुख्य बातें जो छोटे दल में सिखानी हैं।**

इस कोर्स में नए विश्वासियों को अनुशासन की 7 बातें सिखाई जाती हैं जो उनको निरन्तर अनुशासित रखती हैं।आराधना स्तुति के साथ वे अपना निजी अनुभव लोगों को बताते हैं फिर वे चेले बनने के विषय में, वचन पर मनन करने, और वचनों को याद करने के विषय में बात करते हैं। फिर वे उनके साथ बाइबल का अध्ययन करते हैं और उन को घर पर एक तैयारी करने और प्रार्थना करने के लिए बताते हैं।

- **(3) चेले बनाने का कार्स और घरों में कलीसिया की सभा को छोटे झुँड में करना।**

इसमें एक छोटे दल में 2 से 15 लोग हर सप्ताह एक घर में मिलते हैं।

केवल चेले बनाने के लिएः (क) हर पहले और तीसरे हफ्ते चेले बनाने की सभा होगी। (ख) महीने के हर दूसरे और चौथे हफ्ते वे विशेष रूप से आराधना और शिक्षा देने का कार्यक्रम होगा। महीने के अन्य हफ्तों में बाइबल अध्ययन और वचनों को याद करने का अभ्यास किया जाएगा।

या फिर चेले बनाने के साथ-साथ सभा भी की जाएगी। हर तीन हफ्ते बाद चेले बनाने की सभा (क और ख) और कलीसिया की सभा होगी। पहले हफ्ते के दौरान विशेष रूप से आराधना और शिक्षा के लिए होगा। दूसरा हफ्ता बाइबल के वचनों को याद कराने के लिए और बाइबल का अध्ययन करनाने के लिए होगा। और तीसरा हफ्ता विशेष रूप से स्तुति गीत गाने, प्रार्थना करने, बपतिस्में और प्रभु भोज के लिए होगा।

(क) चेले बनाना	**(ख) चेले बनाना**	**(ग) घरों में सभा**
आराधना (+एक गीत)(20 मिनट) शान्त समय (20 मिनट) बाइबल की शिक्षा देना (70 मिनट) अनुकूल उत्तर की प्रार्थना (8 मिन.) घर पर तैयारी का समय(2 मिनट)	मुखस्त करना (20 मिनट) शान्त समय बाँटना (20 मिनट) बाइबल अध्ययन (70 मिनट) मध्यस्थ की प्रार्थना (8 मिनट) घर पर तैयारी का समय (2 मिनट)	गीत गाना (45 मिनट) प्रचार (15 मिनट) प्रार्थना (30 मिनट) प्रभु-भोज या बपतिस्में की सभा साथ भोजन करना जब ज़रूत हो (30 मिनट)

2. व्यक्तिगतः अपने तिमुथियुस को प्रशिक्षण दें

हर घर में होने वाली सभा से या किसी छोटे दल से 2 तिमुथियुस के 2:2 के आधार पर एक व्यक्ति को चुन लें। वह स्त्री या पुरुष भरोसेमन्द, विश्वासयोग्य और शिक्षा देने के लिए योग्य होना चाहिए। इस व्यक्ति से हफ्ते में एक बार ज़रूर मिलें और उसे प्रशिक्षण से लैस करे और उसे उत्साहित करें। उनको इस बात से अवगत कराएँ। एक उदाहरण पेश करना कितना ज़रूरी है विशेष कर इन क्षेत्रों मेः पहले स्वयं वह करना जो हम सिखा रहे हैं, अपने चरित्र और आदतों में बदलाव। उस व्यक्ति को उत्साहित करें कि वह एक दल का अगुवा बन जाए। तब उसे परामर्श दें कि जब वे किसी सभा की अगुवाई करता हैं तब वे भी एक तिमुथियुस को तैयार करे।

3. <u>तरीकाः दल के अगुवों के लिए नियम पुस्तिका।</u>

- **(1) डोटा द्वारा रचित नियम पुस्तिका 1-4 का इस्तमाल करें जिस का नाम है "जाओ और चेले बनाओ।"**

आपका लक्ष्य चेलों और दल के अगुवों को प्रशिक्षण देना है।
नियम पुस्तिका 1 और 2 चेलों की नींव को विकसित करती है।
नियम पुस्तिका 3 और 4 चेलों की उच्चतर प्रगति को वकसित करती है।
बाइबल अध्ययन के पाँच कदम और मसीही जीवन के मुख्य क्षेत्रों के विषय में शिक्षा दी जाती है।
हर नियम पुस्तिका में 12 अध्याय हैं और लगभग दो घंटे का काम हर अध्याय के लिए ज़रूरी है।

- **(2) फिर प्रयोग में लाएँ डोटा द्वारा रचित नियम पुस्तिका 5 से 8 तक जिसका नाम "जाओ और मसीह की कलीसिया का निर्माण करो।"**

आपका लक्ष्य है एक मसीही कलीसिया का निर्माण करना।
नियम पुस्तिका 5 और 6 कलीसिया में सेविकाइयों का विकास करते हैं।
नियम पुस्तिका 7 और 8 भी कलीसिया में स्थापित सेवकाई की उन्नति के लिए कार्य करते हैं। वे युहन्ना रचित सुसमाचार की शिक्षा देते हैं।
हर नियम पुस्तिका में 12 अध्याय होते हैं और हर अध्याय के लिए अपने लक्ष्य को पाने के लिए 2 घँटे ज़रूरी हैं।

- **(3) अन्त में हम डोटा रचित नियम पुस्तिका के 9 से 12 अध्याय का इस्तेमाल करते हैं। जिसका नाम है, "जाओ और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो।"**

आपका लक्ष्य है एक मसीही कलीसिया के लिए अगुवों और मसीही सेवकाई का निर्माण करना।
वे कलीसिया के अगुवो को और छोटे दल के अगुवों को प्रचार करना सिखाते हैं और विशेष रूप से यीशु मसीह के दृष्टान्तों और रोमियों की पत्री का प्रचार करना सिखाते हैं।

हर नियम पुस्तिका में 12 अध्याय है जिस में से हर अध्याय को 2 घँटे का समय़ देना ज़रूरी है।

- **(4) इसके लिए रेडियो, टेलीविज़न, सी.डी., इन्टरनेट, और वेब इन सब का प्रयोग करें क्योकि वे सब डोटा कहलाते हैं।**

उन चीज़ों क साथ इस्तेमाल करके बाइबल की सच्चाईयों को समझ लेना, और मसीही अनुशासन पर चलना और व्यवहारिक हुनर से मसीही सेवकाई करना।

4. <u>दर्शनः एक बढ़ती कलीसिया की सेवकाई की विस्तृत रूप रेखा।</u>

- **(1) एक दल की विस्तृत सेवकाई वह कुँजी हैजिसके द्वारा अगुवे एक घर की संगति के लोगों को या एक दल को तैयार करते हैं।**

यदि एक प्रशिक्षण प्राप्त संगति के लोग एक नए घर में संगति शुरू करते हैं तो 10 साल में कम से कम 256 घरों में या छोटे दलों में सेवकाई बढ़ाई जा सकती है।

- **(2) दूसरी कुँजी यह है कि दल के अगुओं की गिनती बढ़ाने के लिए दल के नए अगुवों को प्रशिक्षण देना होगा।**

शुरूआत करें हर घर की संगति या छोटे दल में एक नए पुरुष या एक नई स्त्री को अगुवा बनने के लिए तैयार करें। जिससे वे आपके देश में और अधिक अगुवे तैयार कर सकें। बाद में हर कलीसिया एक पुरुष और एक स्त्री को नियुक्त करे कि वे नए अगुवों के प्रशिक्षण दें।

- **(3) परमेश्वर की आज्ञाएँ और वायदे**

परमेश्वर की आज्ञा थी आदम और हव्वा के लिए जो और सारे संसार को परमेश्वर के स्वरूप के लोगों से भर दो। और फिर यीशु की कमिशन "जाओं और मेरे नाम से चेले बनाओ।"

(परमेश्वर की योजना कभी भी असफल न होगी। क्योंकि परमेश्वर ने यशायाह 14:24,27 और भजन 138:8 में कहा था, "मैं ने योजना बनाई है, और ऐसा ही होगा।" अन्त में हर देश से, हर जाति से, हर भाषा को बलने वाले लोगों की एक बड़ी भीड़ होगी जिसकी गिनती नहीं की जा सकेगी जब वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होंगे। (प्रकासित वाक्य 7:9)

एक चेलों का दल शुरू करने के लिए आप क्या करेंगे?

(क) एक लक्ष्य निरधारित करें

1) वे चार नियम पुस्तिकाएं जो चेले बनाने के लिए रची गई हैं उनके निम्न लक्ष्य हैः

- **एक व्यक्ति को मसीही बनने के लिए सहायता कर सके।**
- **दूसरे युवा मसीहों को मसीह में परिपक्व बनने में सहायता कर सके।**
- **मसीही अगुवों को प्रशिक्षण देकर लैस कर सके कि वे सफल अगुवे, कार्यकर्ता और कलीसिया के अगुवे बन कर सेवा करें।**

चेतावनीः इन पुस्तिकाओं में जो है केवल उसके द्वारा वह किसी को मसीह का चेला नहीं बनाता है। आत्मिक उन्नति केवल किसी व्यक्ति के सच पर विश्वास करने और उस सच को जीवन में लागू करना। "परमेश्वर ने हम को बाइबल दी है केवल इस लिए नहीं कि हम अपने ज्ञान को बढ़ा सकें वरन इसके लिए अपने जीवन को बदल सकें।"

2) चेले बनाने के इस पाठ्यक्रम में निम्न विशेषताएँ

- **यह सहभागिता का कार्यक्रम है।**
  दल का हर व्यक्ति इस में भाग लेगा।
- **आप इस पर खर्च उठा सकते हैं।**
  विद्यार्थी को केवल एक बाइबल, एक कापी, और एक पेन की ज़रूरत होती है।
  दल के अगुवे ही केवल इस नियम पुस्तिका को इस्तेमाल करेंगे।
- **यह परिस्थिति के अनुसार अपने को ढाल लेता है।**
  दल के अगुवे इस पाठ्यक्रम को किसी भी रूप में ढाल कर इसे अपनी योजना के अनुसार इस्तेमाल कर सकते हैं। उनको किसी भी अन्य वस्तु को इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं होगी।
- **यह रचनात्मक है।**
  विद्यार्थियों को उत्साहित किया जाता है कि वे सोचें और कायल होकर कुछ करें। वे अपने हुनर का इस्तेमाल करके कुछ नया बनाएँ।
- **वह प्रयोगात्मक है।**
  यह नियम पुस्तिका ऐसे रास्ते सिखाती है जो प्रयोग में लाए जा सकते हों और विद्यार्थी उसे इस्तेमाल करके कुछ सीख सकें।
- **इस का हस्तांतरण किया जा सकता है।**
  वे विद्यार्थी जिन्होंने अपना कोर्स समाप्त कर लिया है तो वह इस नियम पुस्तिका को किसी दूसरे को प्रशिक्षण देने के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

ख. एक योजना बनाएँ

1. परमेश्वर

परमेश्वर क्या कहते हैं कि आप को क्या करना चाहिए? परमेश्वर को अनुमति दें कि वह बाइबल, पवित्र आत्मा और प्रार्थना के द्वारा आप का मार्गदर्शन करें।

2. ज़रूरतें

उन लोगों की ज़रूरतें क्या हैं जिनको आप प्रशिक्षण देना चाहते हैं? उनके जीवन का ध्यान से अवलोकन करें।

3. अवसर

आपके पास कौन-कौन से अवसर हैं और आपकी क्या योग्ताएँ है, आपके पास कितनी धन-सम्पदा है और आपकी क्या मुश्किलें हैं।

4. सामंजस्य

आप अपनी योजनाओं को कैसे अनुकूल बना सकते हैं? आप कितने लोगों को प्रशिक्षण देना चाहते हैं? हर विद्यार्थी कितना परिपक्व और योग्य है? एक विद्यार्थी के पास आपके लिए और आप के पास एक विद्यार्थी के पास कितना समय है?

5. स्थान

एक उपयुक्त स्थान का चुनाव करें जहाँ पर दल के लोग अगुवे से मिल सके। पता करें कि क्या हर विद्यार्थी मिलने के स्थान पर पहुँच सकता है? क्या उस स्थान पर भटकाने वाली कोई तो चीज़ है?

ग. समर्पित लोगों का पंजीकरण करें

1. पंजीकरण

- **ज़रूरतें**

प्रार्थना के साथ नए विद्यार्थियों को खोजें। उन्हें जो विश्वास योग्य है और जो सीखना चाहते हैं। केवल उन्ही का पंजीकरण करें।

- **सूचित करना**

एक निमन्त्रण भेजें कि लोग आकर भाग लें। जिन्हें निमन्त्रण भेजें उन को सूचित कर दें कि यह एक अनुशासन का कार्यक्रम है।

2. विद्यार्थियों से कहे कि वे स्वयं को निम्न 5 जीवन-स्तरों के प्रति समर्पित करें।

- **विश्वासयोग्य बने रहना।**

मैं छोटे दल की हर सभा में उपस्थित रहूँगा।

- **सदा तैयार रहना।**

मैं ग्रह कार्य को सभा में आने से पहले अपना काम समाप्त करके आऊँगा।

- **शिक्षा ग्रहण करने को तैयार रहना।**

मैं सीखने को तैयार हूँ और जो कुछ सीखता हूँ उसे अपने जीवन में लागू करूँगा।

- **प्रेम से रहना।**

मैं प्रेम से दल के अन्य विद्यार्थियों की मदद करूँगा।

- **ज़िम्मेदार रहना।**

मैं अपनी उन्नति और संघर्ष को दल के दूसरे लोगों के साथ बाँटूँगा।

दल के अन्य लोगों को इस विषय पर प्रार्थना करने दे और तब मिल कर अपना निजि निर्णय लें जो इस बात के विषय में हो कि वे क्या करने वाले हैं।

घ. चीज़ों का प्रयोग करें

1. बाइबल

शिक्षा और प्रशिक्षण देने के लिए बाइबल आपका सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

2. <u>नियम पुस्तिका</u>

डोटा की 4 नियम पुस्तिकाओं को अपने कार्यक्रम के अनुसार शिक्षा और प्रशिक्षण देने के लिए प्रयोग करे।

3. <u>श्वेत-पट</u>

शिक्षा देते समय श्वेत-पट का प्रयोग करें।

4. <u>नोट्स</u>

विद्यार्थियों को उत्साहित करें कि वे निजि नोट्स बनाएँ और जितना हो सके उन्हें हर रीति से पूरा करें।

5. <u>इन्टरनेट, रेडियो, और टेलीविज़न</u>

दल के अगुवे और विद्यार्थी फायदा उठा सकते हैं उन सब कार्यक्रमों से जो सैटेलाइट टी.वी. पर दिखाए जाते हैं और सी.डी और इन्टरनेट की वेब साइट से भी लाभ उठा सकते हैं।

ङ. छोटे दलों की संख्या बढ़ाते रहें

1. <u>विद्यार्थियों को अपना एक छोटा दल शुरू करने को कहें</u>

जब आपके एक छोटे दल का प्रशिक्षण समाप्त हो जाए तब विद्यार्थियों को चुनौती दें कि वे अपना निज का एक नया दल बना लें। और अपनी 4 नियम पुस्तिका का प्रयोग करें। या फिर पहले केवल दो ही विद्यार्थियों के साथ नया दल शुरू कर लें। (लूका 10:1-2)

2. <u>नियम पुस्तिका केवल दल के अगुवों के लिए है।</u>

एक नियम पुस्तिका प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद उन विद्यार्थियों को नियम पुस्तिका की एक प्रति उन प्रशिक्षित अगुवे को दे दी जाएगी जो एक नए दल की अगुवाई करेगा।

3. <u>निरन्तर नए दल के अगुवों से मिलते रहें।</u>

नए अगुवों से निरन्तर मिलते रहें जो नए चेले बनने के लिए आए विद्यार्थियों का प्रशिक्षण कर रहे हैं। उनको अवसर दे कि वे आपके साथ बाँट सकें कि वे अपने दल के साथ क्या कर रहे हैं। उनके प्रश्नो और समस्याओं के विषय पर बातचीत करें। दल के साथ मिल कर प्रार्थना करें और उन को आगे का प्रशिक्षण दें। नए दल के अगुवो को ज़रूरत है परामर्शदाता और शिक्षक की।
